ज्वालामुखी योग - 27

अव्यक्त बापदादा :- (13. 02. 1991)

➳ _ ➳ दृढ़ निश्चय रखा कि जाना ही है तो पहुँच गये ना ? जाये न जाये - यह सोचने वाले रह गये। अभी तो यह कुछ भी नहीं है, अभी तो होना है। अभी प्रकृति ने फुल फोर्स की हलचल शुरु नहीं की है। करती है लेकिन फिर आप लोगों को देखकर थोड़ा ठन्डी हो जाती है। वह भी डर जाती है कि मेरे मालिक तैयार नहीं हैं। किसकी दासी बनें? निर्भय हो ना? डरने वाले तो नहीं हो ना? लोग डरते हैं मरने से और आप तो है ही मरे हुए। **पुरानी दुनिया से मरे हुए हो ना? नई दुनिया में जीते हो, पुरानी दुनिया से मरे हुए हो, तो मरे हुए को मरने से क्या डर लगेगा? और ट्रस्टी हो ना?**

➳ _ ➳ **अगर कोई भी मेरापन होगा तो माया बिल्ली म्याऊं म्याऊं करेगी। मैं आऊं, मैं आऊं.। आप तो हो ही ट्रस्टी। शरीर भी मेरा नहीं।** लोगों को मरने का फिकर होता है या चीजों का या परिवार का फिक्र होता है। आप तो हो ही ट्रस्टी। न्यारे होना, कि थोड़ा-थोड़ा लगाव है? बॉडी कान्सेसनेस है तो थोड़ा-थोड़ा लगाव है। **इसलिए तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप, निर्भय।** अच्छा।

➢➢ ब्राह्मणों को कौन-कौन सी Attachment, लगाव है ? A, B, C, D of Attachment-

➳ _ ➳ A- Appreciation- प्रशंसा

→ **प्रशंसा सुनने से बहुत खुशी होती है, अच्छा लगता है**

- अन्दर ही अन्दर दिल garden garden हो जाता है
- प्रशंसा ना हुई तो forest forest हो जाता है, दुःख, निराशा, उदास, हृदय विदीर्ण हो जाता है
- प्रशंसा से अति सुख मिल रहा है तो ग्लानि से, निंदा से, अपमान से उतना ही अधिक दुःख मिलेगा
  - **योगी अर्थात निंदा, स्तुति, जय, पराजय सबमें समान**

➳ _ ➳ Animals- जानवरों से लगाव

- **कई ब्राह्मणों को लगाव है Dog, Cat, Cow, Birds की पालना करते हैं**
- घुमाने लेकर जाते हैं

➳ _ ➳ B- भक्ति

→ ज्ञान में आ गए, सेण्टर पर मुरली सुनी, फिर बीच रास्ते में मंदिर आता है तो हाथ जोड़ना, फूल, अगरबत्ती, दिया जलाना

- **ज्ञान में आने के बाद भी भक्ति चालू है इसका मतलब ज्ञान को समझा ही नहीं है**
- भक्ति के सूक्ष्म संस्कार अब भी हैं

- **शिव बाबा से कुछ ना कुछ मांग रहे हैं-सफलता, साथियों के लिए सहयोग, जमीन, सेवाकेंद्र, कोई VIP, कर्मभोग सूली से कांटा हो जाए**

➳ _ ➳ C- Comfort Jone

→ हर आत्मा को अपना comfort jone पसंद है, उससे बाहर जाने से बेचैनी होती है

- अपनी दिनचर्या fix करके रखी है उसमें अगर सेवा के लिए या किसी कर्तव्य के लिए बाहर निकलना पड़े तो अति बेचैनी होती है
- ये भी आसक्ति है
- **जब कर्तव्य पुकारे तो सबकुछ छोड़ना है**
- कर्तव्य से बड़ा कुछ भी नहीं है

➳ _ ➳ D- Dress

→ अलग-अलग कलर के dresses से attachment

➳ _ ➳ Degrees-

→ जो डिग्रीस हैं उसीमें अटैचमेंट

- **ब्रहमाकुमार, ब्रहमाकुमारी बनना इस संसार की सबसे बड़ी डिग्री है**

➳ _ ➳ E- Eatables, food, भोजन

→ **Particular Food चाहिए, नहीं मिले तो बेचैनी,**

→ मनपसन्द भोजन ना मिले तो नींद नहीं आती है

→ एक अज्ञात सी निराशा

- **जितना व्यक्ति खाने से बीमार पड़ता है उतना ना खाने से नहीं पड़ता**

➳ _ ➳ Emotions

→ एक particular emotion में ही स्थित होने की इच्छा, जो दुःख देता है, परन्तु छूटता नहीं है उसीमें सुख मिलता है

- जिस feeling ने दुःख दिया पर अगले ही दिन फिर वही
- विकारों से सम्बंधित emotions

➳ _ ➳ F- Facility

→ मुरली में साधन के लिए अनुवादित शब्द है facility और निमित्त के लिए Instrument यूज़ किया जाता है

➳ _ ➳ Fashion

➳ _ ➳ G- Games

→ क्रिकेट, Football, Mobile Games

- खेलना health के लिए अच्छा है पर देखना जिससे कोई लेना-देना नहीं
- **ये संगमयुग का समय है खेल देखना बुद्धिमानी नहीं है**

- **जो क्रिकेट मैच देख रहा है क्या वो याद की अवस्था में है?**

- क्या वो आत्म अभिमानी स्थिति में है?
- क्या वो श्रीमत पर है?
- क्या वो समय को सफल कर रहा है?
- उसकी अवस्था कैसी है-आवेश, आवेग, Excitement
  - **इस अवस्था में शरीर छूट जाय तो वो किसकी याद में छूटा?**
  - खाने की टेबल पर फिर चर्चा- प्रभाव, मनन, वर्णन, वातावरण

→ ये सब देखने में आवेश, आवेग है, कौन जीतेगा

→ इनमें ज्यादातर दूसरों को हराने की भावना है

- दूसरों को हराने के भाव में हिंसा है
- इसमें विश्व कल्याण की भावना नहीं है
  - **जिस चित्त में हिंसा का भाव है वो काम को नहीं जीत सकता**

➳ _ ➳ H- Home

→ अपने लौकिक घर से ही आसक्ति

→ मेरा घर, मेरी मां, मेरी बहन, मेरा भाई

- मधुबन में, सेंटर पर आ गए पर घर की दाल-रोटी खींचती है
- कब जाकर माँ के हाथ का खाऊँ
  - **यहाँ भगवान माँ खिला रहा है**
  - **Cut the bridges, Drown the boat, Throw the ladder**

➳ _ ➳ I- Information

→ information से भी आसक्ति

→ हमारे पास information है और दूसरों के पास नहीं तो कितने मूर्ख हैं, बुद्धू हैं, पिछड़े हुए हैं

➳ _ ➳ J- Jokes

→ दिनभर Jokes भेजते रहना, पढ़ते रहना

→ उसीमें टाइम जा रहा है

→ जोक्स में विकार भी आ सकते हैं

➳ _ ➳ K- कीर्ति, fame

→ **अध्यात्म के मार्ग में प्रसिद्धि की कामना जब हो जाती है तब उसका पतन निश्चित है**

→ **योगी विकारों को तो जीत लिया परन्तु अचानक से प्रसिद्धि आ जाती है तो उस प्रसिद्धि में खो जाता है**

- उसको खुद को पता नहीं चलता है, जब गिर जाता है तब पता चलता है

- **अध्यात्मिक उन्नति एक आंतरिक और सूक्ष्म क्रिया है, ये बाहर से किसी को पता नहीं चलता है**